



Anita

20 Mar 1968

08:00 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121949401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 20/03/1968
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 08:00:00 घंटे
इष्ट _____: 03:56:08 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:38:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:07:31 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:29:38 घंटे
सूर्योदय _____: 06:25:32 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:32:12 घंटे
दिनमान _____: 12:06:39 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 06:08:20 मीन
लग्न के अंश _____: 07:43:52 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: सिद्धि
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: नो-नौनिहाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1889	फाल्गुन	30
पंजाबी	संवत : 2024	चैत्र	8
बंगाली	सन् : 1374	चैत्र	6
तमिल	संवत : 2024	पंगुनी	7
केरल	कोल्लम : 1143	मीनम	7
नेपाली	संवत : 2024	चैत्र	7
चैत्रादि	संवत : 2024	चैत्र	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2024	फाल्गुन	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:40:33
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:47:13 घंटे
जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्धि
योग समाप्ति काल _____ : 22:01:24 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 07:40:33 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 06:56:17
भभोग _____ : 56:24:19
भोग्य दशा काल _____ : बुध 14 वर्ष 10 मा 22 दि

घात चक्र

मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : वृष
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

रा सू श	मं ल		
शु बु			
			गु
	चं		के

लग्न कुण्डली

	मं ल	श सू	रा शु बु
गु			
के			चं

विंशोत्तरी
बुध 14वर्ष 10मा 22दि
बुध

20/03/1968

10/02/2086

बुध	10/02/1983
केतु	10/02/1990
शुक्र	10/02/2010
सूर्य	10/02/2016
चन्द्र	10/02/2026
मंगल	10/02/2033
राहु	10/02/2051
गुरु	10/02/2067
शनि	10/02/2086

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 4मा 17दि
संकटा

06/08/2021

06/08/2029

संकटा	17/05/2023
मंगला	07/08/2023
पिंगला	16/01/2024
धान्या	15/09/2024
भामरी	06/08/2025
भद्रिका	16/09/2026
उल्का	16/01/2028
सिद्धा	06/08/2029

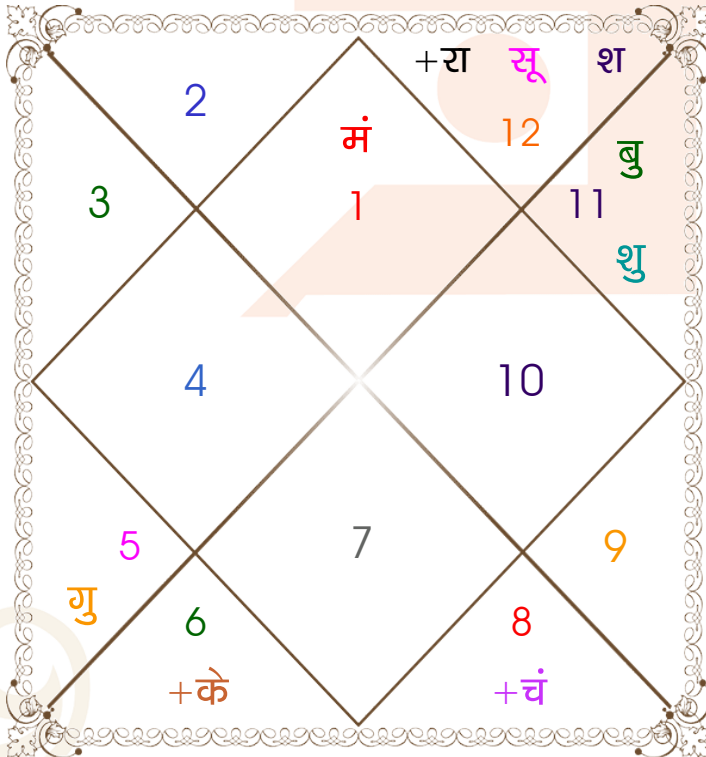
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	07:43:52	475:35:11	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	---
सूर्य			मीन	06:08:20	00:59:36	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	18:19:05	14:16:03	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	नीच राशि
मंगल			मेष	00:44:44	00:44:39	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	मूलत्रिकोण
बुध			कुंभ	09:37:56	01:15:46	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
गुरु	व		सिंह	04:02:57	00:05:43	मघा	2	10	सूर्य	केतु	चंद्र	मित्र राशि
शुक्र			कुंभ	12:11:03	01:13:57	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मित्र राशि
शनि			मीन	19:56:49	00:07:25	रेवती	1	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
राहु			मीन	25:25:00	00:01:08	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	सम राशि
केतु			कन्या	25:25:00	00:01:08	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	शत्रु राशि
हर्ष	व		कन्या	03:39:54	00:02:37	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	---
नेप	व		वृश्चि	02:59:26	00:00:42	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
प्लूटो	व		सिंह	27:54:58	00:01:36	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	---
दशम भाव			धनु	27:18:26	--	उत्तराषाढा	--	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	--

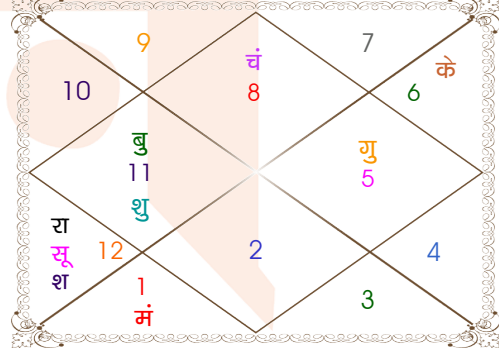
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:24:41

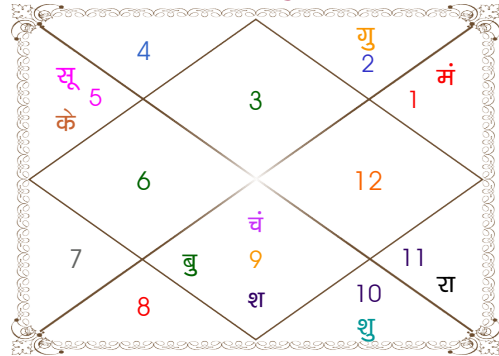
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 20:59:37	मेष 07:43:52
2	मेष 20:59:37	वृष 04:15:23
3	वृष 17:31:09	मिथुन 00:46:55
4	मिथुन 14:02:40	मिथुन 27:18:26
5	कर्क 14:02:40	सिंह 00:46:55
6	सिंह 17:31:09	कन्या 04:15:23
7	कन्या 20:59:37	तुला 07:43:52
8	तुला 20:59:37	वृश्चिक 04:15:23
9	वृश्चिक 17:31:09	धनु 00:46:55
10	धनु 14:02:40	धनु 27:18:26
11	मकर 14:02:40	कुम्भ 00:46:55
12	कुम्भ 17:31:09	मीन 04:15:23

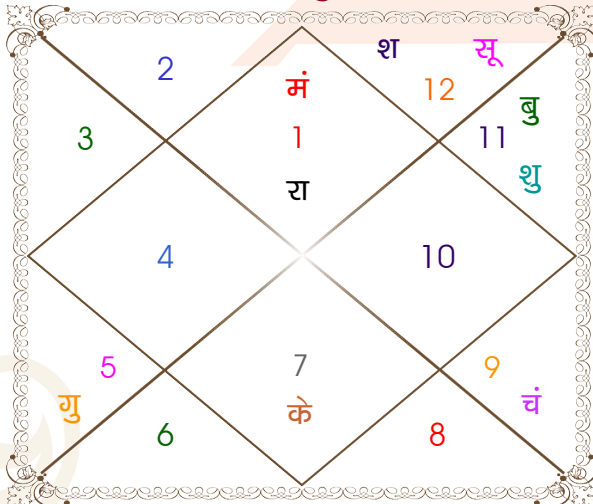
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	07:43:52
2	वृष	08:59:26
3	मिथुन	03:48:23
4	मिथुन	27:18:26
5	कर्क	23:35:16
6	सिंह	26:46:46
7	तुला	07:43:52
8	वृश्चिक	08:59:26
9	धनु	03:48:23
10	धनु	27:18:26
11	मकर	23:35:16
12	कुम्भ	26:46:46

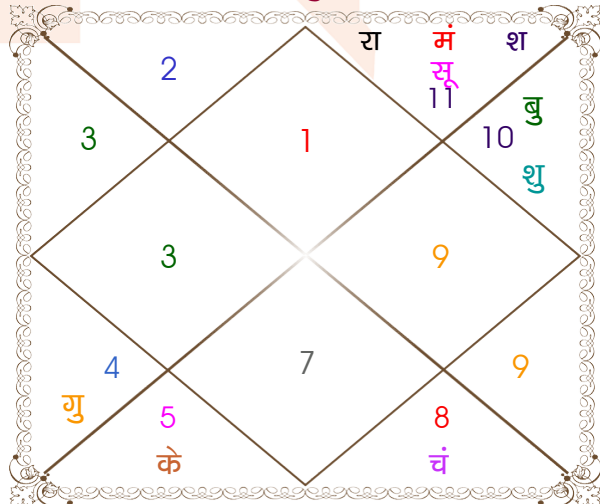
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 14 वर्ष 10 मास 22 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
20/03/1968	10/02/1983	10/02/1990	10/02/2010	10/02/2016
10/02/1983	10/02/1990	10/02/2010	10/02/2016	10/02/2026
बुध 08/07/1968	केतु 09/07/1983	शुक्र 11/06/1993	सूर्य 30/05/2010	चंद्र 11/12/2016
केतु 06/07/1969	शुक्र 07/09/1984	सूर्य 12/06/1994	चंद्र 29/11/2010	मंगल 12/07/2017
शुक्र 06/05/1972	सूर्य 13/01/1985	चंद्र 10/02/1996	मंगल 06/04/2011	राहु 11/01/2019
सूर्य 12/03/1973	चंद्र 14/08/1985	मंगल 11/04/1997	राहु 29/02/2012	गुरु 12/05/2020
चंद्र 11/08/1974	मंगल 10/01/1986	राहु 11/04/2000	गुरु 17/12/2012	शनि 11/12/2021
मंगल 09/08/1975	राहु 29/01/1987	गुरु 11/12/2002	शनि 29/11/2013	बुध 12/05/2023
राहु 25/02/1978	गुरु 05/01/1988	शनि 10/02/2006	बुध 05/10/2014	केतु 11/12/2023
गुरु 02/06/1980	शनि 13/02/1989	बुध 11/12/2008	केतु 10/02/2015	शुक्र 11/08/2025
शनि 10/02/1983	बुध 10/02/1990	केतु 10/02/2010	शुक्र 10/02/2016	सूर्य 10/02/2026

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
10/02/2026	10/02/2033	10/02/2051	10/02/2067	10/02/2086
10/02/2033	10/02/2051	10/02/2067	10/02/2086	00/00/0000
मंगल 09/07/2026	राहु 24/10/2035	गुरु 30/03/2053	शनि 13/02/2070	बुध 20/03/2088
राहु 27/07/2027	गुरु 18/03/2038	शनि 12/10/2055	बुध 23/10/2072	00/00/0000
गुरु 02/07/2028	शनि 22/01/2041	बुध 16/01/2058	केतु 02/12/2073	00/00/0000
शनि 11/08/2029	बुध 12/08/2043	केतु 23/12/2058	शुक्र 31/01/2077	00/00/0000
बुध 08/08/2030	केतु 29/08/2044	शुक्र 23/08/2061	सूर्य 13/01/2078	00/00/0000
केतु 05/01/2031	शुक्र 30/08/2047	सूर्य 12/06/2062	चंद्र 15/08/2079	00/00/0000
शुक्र 06/03/2032	सूर्य 24/07/2048	चंद्र 12/10/2063	मंगल 23/09/2080	00/00/0000
सूर्य 11/07/2032	चंद्र 23/01/2050	मंगल 16/09/2064	राहु 30/07/2083	00/00/0000
चंद्र 10/02/2033	मंगल 10/02/2051	राहु 10/02/2067	गुरु 10/02/2086	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 14 वर्ष 10 मा 27 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल 10/02/2026 09/07/2026	मंगल - राहु 09/07/2026 27/07/2027	मंगल - गुरु 27/07/2027 02/07/2028	मंगल - शनि 02/07/2028 11/08/2029	मंगल - बुध 11/08/2029 08/08/2030
मंगल 18/02/2026 राहु 13/03/2026 गुरु 02/04/2026 शनि 25/04/2026 बुध 16/05/2026 केतु 25/05/2026 शुक्र 19/06/2026 सूर्य 27/06/2026 चंद्र 09/07/2026	राहु 04/09/2026 गुरु 26/10/2026 शनि 25/12/2026 बुध 18/02/2027 केतु 12/03/2027 शुक्र 15/05/2027 सूर्य 03/06/2027 चंद्र 05/07/2027 मंगल 27/07/2027	गुरु 11/09/2027 शनि 04/11/2027 बुध 22/12/2027 केतु 11/01/2028 शुक्र 08/03/2028 सूर्य 25/03/2028 चंद्र 22/04/2028 मंगल 12/05/2028 राहु 02/07/2028	शनि 04/09/2028 बुध 01/11/2028 केतु 24/11/2028 शुक्र 31/01/2029 सूर्य 20/02/2029 चंद्र 26/03/2029 मंगल 18/04/2029 राहु 18/06/2029 गुरु 11/08/2029	बुध 01/10/2029 केतु 23/10/2029 शुक्र 22/12/2029 सूर्य 09/01/2030 चंद्र 08/02/2030 मंगल 01/03/2030 राहु 25/04/2030 गुरु 12/06/2030 शनि 08/08/2030
मंगल - केतु 08/08/2030 05/01/2031	मंगल - शुक्र 05/01/2031 06/03/2032	मंगल - सूर्य 06/03/2032 11/07/2032	मंगल - चंद्र 11/07/2032 10/02/2033	राहु - राहु 10/02/2033 24/10/2035
केतु 17/08/2030 शुक्र 11/09/2030 सूर्य 18/09/2030 चंद्र 01/10/2030 मंगल 10/10/2030 राहु 01/11/2030 गुरु 21/11/2030 शनि 14/12/2030 बुध 05/01/2031	शुक्र 17/03/2031 सूर्य 07/04/2031 चंद्र 12/05/2031 मंगल 06/06/2031 राहु 09/08/2031 गुरु 05/10/2031 शनि 11/12/2031 बुध 10/02/2032 केतु 06/03/2032	सूर्य 12/03/2032 चंद्र 23/03/2032 मंगल 30/03/2032 राहु 18/04/2032 गुरु 05/05/2032 शनि 26/05/2032 बुध 13/06/2032 केतु 20/06/2032 शुक्र 11/07/2032	चंद्र 29/07/2032 मंगल 11/08/2032 राहु 12/09/2032 गुरु 10/10/2032 शनि 13/11/2032 बुध 13/12/2032 केतु 25/12/2032 शुक्र 30/01/2033 सूर्य 10/02/2033	राहु 07/07/2033 गुरु 16/11/2033 शनि 21/04/2034 बुध 08/09/2034 केतु 04/11/2034 शुक्र 18/04/2035 सूर्य 06/06/2035 चंद्र 27/08/2035 मंगल 24/10/2035
राहु - गुरु 24/10/2035 18/03/2038	राहु - शनि 18/03/2038 22/01/2041	राहु - बुध 22/01/2041 12/08/2043	राहु - केतु 12/08/2043 29/08/2044	राहु - शुक्र 29/08/2044 30/08/2047
गुरु 18/02/2036 शनि 05/07/2036 बुध 07/11/2036 केतु 28/12/2036 शुक्र 23/05/2037 सूर्य 06/07/2037 चंद्र 17/09/2037 मंगल 07/11/2037 राहु 18/03/2038	शनि 30/08/2038 बुध 25/01/2039 केतु 26/03/2039 शुक्र 16/09/2039 सूर्य 07/11/2039 चंद्र 02/02/2040 मंगल 02/04/2040 राहु 05/09/2040 गुरु 22/01/2041	बुध 03/06/2041 केतु 28/07/2041 शुक्र 30/12/2041 सूर्य 14/02/2042 चंद्र 03/05/2042 मंगल 26/06/2042 राहु 13/11/2042 गुरु 17/03/2043 शनि 12/08/2043	केतु 03/09/2043 शुक्र 06/11/2043 सूर्य 25/11/2043 चंद्र 27/12/2043 मंगल 18/01/2044 राहु 16/03/2044 गुरु 06/05/2044 शनि 06/07/2044 बुध 29/08/2044	शुक्र 28/02/2045 सूर्य 24/04/2045 चंद्र 24/07/2045 मंगल 26/09/2045 राहु 09/03/2046 गुरु 02/08/2046 शनि 23/01/2047 बुध 27/06/2047 केतु 30/08/2047

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

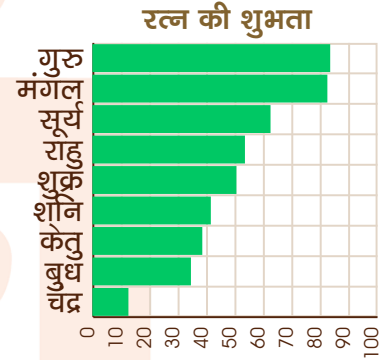
मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	83%	सन्तति सुख, भाग्योदय, कम खर्च
मूंगा	मंगल	82%	स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	62%	कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	53%	कम खर्च, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	50%	धनार्जन, धन, दम्पति
नीलम	शनि	41%	व्यय, व्यावसायिक हानि, हानि
लहसुनिया	केतु	38%	शत्रु व रोग, हानि
पन्ना	बुध	34%	हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
मोती	चंद्र	12%	दुर्घटना, ग्रह कलेश



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	10/02/1983	69%	0%	82%	55%	83%	56%	41%	53%	38%
केतु	10/02/1990	50%	0%	88%	34%	83%	56%	16%	31%	56%
शुक्र	10/02/2010	50%	0%	82%	47%	83%	62%	52%	59%	50%
सूर्य	10/02/2016	75%	25%	88%	34%	89%	25%	16%	31%	12%
चंद्र	10/02/2026	69%	38%	82%	47%	83%	50%	41%	31%	12%
मंगल	10/02/2033	69%	25%	94%	9%	89%	50%	41%	31%	50%
राहु	10/02/2051	50%	0%	69%	34%	83%	56%	52%	66%	12%
गुरु	10/02/2067	69%	25%	88%	9%	95%	25%	41%	53%	38%
शनि	10/02/2086	50%	0%	69%	47%	83%	56%	58%	59%	12%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

पराक्रम
दम्पति
दुर्घटना
भाग्योदय
धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल लग्न में स्थित है। अतः जन्मकुण्डली के अनुसार आप मांगलिक हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगली दोष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आपको शुभ फलों की प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव जीवन में अल्प ही रहेगा। इस प्रकार आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता का अभाव रहेगा। परन्तु यदा कदा आपके स्वभाव में क्रोध के भाव की प्रबलता भी दृष्टि गोचर होगी। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब तो हो सकता है परन्तु विवाह प्रक्रिया अत्यन्त ही सुखद वातावरण में सम्पन्न होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा परन्तु विवाहोपरान्त यदा कदा पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। फलतः कभी कभी वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति कर सकती हैं।

आपकी कुंडली में लग्न में स्थित मंगल की दृष्टि सुख भाव पर होने से आप जीवन में आवश्यक सुखोपभोग के संसाधनों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे परन्तु इसमें आपको परिश्रम अधिक मात्रा में करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर भी मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। समय समय पर आपसी असहमति के कारण वाद विवाद भी होते रहेंगे फलस्वरूप परस्पर प्रेम पूर्ण संबंधों में अल्प समय के लिए तनाव उत्पन्न होगा। इसके साथ ही मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर भी पड़ती है अतः शारीरिक कुशलता पूर्ण रूप से रहेगी। कभी कभी अनावश्यक विघ्न बाधाएं कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगी जिससे आप मानसिक रूप से उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा तथा जीवन में आप पूर्ण रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखद एवं शुभ बनाने के लिए तथा मंगल के प्रभाव को और अधिक अनुकूल करने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक कन्या का या ऐसी मंगली कन्या जिसका शास्त्रानुसार उचित रूप से मंगल का दोष भंग हो रहा हो उससे विवाह का प्रस्ताव करना चाहिए। इस प्रकार

समस्त दोषों का निवारण करके यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन को प्रारम्भ करेंगे तो इससे आपका जीवन अत्यन्त ही सुखमय एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही जीवन में समस्त आवश्यक सुख साधनों की इच्छित प्राप्ति होगी एवं आर्थिक क्षेत्र में भी पूर्ण रूप से सुदृढ़ता रहेगी तथा धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सर्वदा सुशोभित रहेंगे। आप एक सौभाग्य शाली पुरुष होंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपने भाग्यबल एवं आवश्यक परिश्रम से सफल बना कर दाम्पत्य जीवन को शान्ति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कन्या की कुंडली में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में हो तो ऐसी कन्या के साथ दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रथम भावस्थ मंगल की स्थिति से कन्या का शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा जिससे सांसारिक तथा सामाजिक कार्यों को सम्पन्न करने में अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी एवं दाम्पत्य सुख में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। इसके साथ ही कुंडली मिलान के समय में पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए तथा सतर्कतापूर्वक अन्तिम निष्कर्ष लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हों एवं जीवन सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत हो सके।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

षष्ठभावे में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र
(10/02/2016 - 10/02/2026)**

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 10/02/2016 को आरम्भ और 10/02/2026 को समाप्त होगी।

चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है और अष्टम भाव लम्बी आयु या आयु-विस्तार, विरासत, इच्छाओं, बीमा, पेंशन, डूबने से मृत्यु, दुर्भाग्य, दुःख, अपमान, विषाद, असंतोष बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आश्चर्य और उथल-पुथल की घटनाओं से भरी होगी और आपके जीवन में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी।

स्वास्थ्य :

अष्टम महादशा का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है। अष्टम भाव लंबी आयु का प्रतिनिधित्व करता है। फलस्वरूप आपकी आयु लम्बी होगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। जैसे किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या अथवा दुर्घटना की संभावना नहीं है किन्तु इस अवधि में आपकी कुछ झड़पें हो सकती हैं।

अर्थ तथा संपत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा उत्तम है और आपको भूमि, वाहन, शक्ति या पूर्व में अर्जित शिक्षा के कारण पद की प्राप्ति हो सकती है। कुछ नुकसान भी हो सकता है। फिर भी आपको कुछ पैतृक सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप संतुष्ट रहेंगे। यदि सेवारत हों तो आपकी पदोन्नति हो सकती है, यद्यपि आप कुछ मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं के शिकार हो सकते हैं। आपका हृदय विशाल होगा और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो कुछ उतार-चढ़ाव की संभावनाएं हैं जिनके फलस्वरूप आप का भाग्य उत्तम होगा और आप उन्नति करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे और पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और सम्भव है कि आपके माता-पिता आपके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं जिससे आपका जीवन सुखमय व सौहार्द्रपूर्ण हो।

**महादशा :- मंगल
(10/02/2026 - 10/02/2033)**

मंगल की महादशा 10/02/2026 को आरम्भ तथा 10/02/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल प्रथम भाव में अव्यथित है। अतः यह दशा आपके लिये भाग्यशाली और उत्तम होगी। इसके पूर्व आपकी 10 वर्षों की चन्द्रदशा चल रही थी। आप को माता से लाभ और सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति होगी। इस दशा में आपको शुभ फल मिलते रहेंगे। आपको यश, प्रतिष्ठा, उत्तम स्वास्थ्य तथा कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको ऊर्जा तथा जीवन शक्ति की प्राप्ति होगी। आप अपने सारे कार्यों का पूरे उत्साह से सम्पादन करेंगे। इस दशा के दौरान आप आत्मविश्वासी और हठधर्मी होंगे और अपनी प्रशासनिक क्षमता का प्रदर्शन करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के कारण आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सम्मान करना पड़ सकता है। आप सरदर्द, हृदय-रोग या पित्त-दोष से पीड़ित हो सकते हैं।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप प्रशासनिक सेवा में हैं तो इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। आप सुखियों में रहेंगे और आपको यश और प्रसिद्धि की

प्राप्ति होगी। व्यवसाय तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी। आपको अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतरण या परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। मुकदमें में विजय होगी। आप सैन्य सेवा, अभियन्त्रण, शल्य चिकित्सा या लौह-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध व्यवसाय का चयन अपनी जीविका के लिये कर सकते हैं। आप योजना-कार्य या प्रशासनिक कार्यों का सम्पादन अति सुन्दर ढंग से कर सकते हैं। आप रसायन, सामुद्री उत्पाद, कुटीर-उद्योग आदि से संबंधित व्यापार कर सकते हैं। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या शल्प चिकित्सक हो सकते हैं। आप तकनीकी अथवा कृषि से सम्बद्ध कार्यों में सफल होंगे।

सम्पत्ति, वाहन, यात्राएं :

आप न केवल स्वयं धन अर्जित करेंगे बल्कि आपको विरासत की भू-सम्पत्ति भी मिलेगी। अचानक अप्रत्याशित स्रोतों से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। पैतृक सम्पत्ति, दाय, सेवा-निवृत्ति से लाभ, बोनस, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति हो सकती है जो लाभदायक होंगी। साझेदारों या पैतृक सम्पत्ति से लाभ भी हो सकते हैं। इस दशा में आप अपने मकान का निर्माण कर सकते हैं या आपको किसी मकान की प्राप्ति हो सकती है।

शिक्षा :

इस अवधि में आप की शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रगति करेंगे। आपको छात्रवृत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं, वाद-विवादों और अन्य प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। दृढ़ और आत्मविश्वासी होंगे तथा नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। खेलों, विज्ञान तथा तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। आप एक गम्भीर छात्र होंगे-हमेशा सक्रिय, सावधान और प्रतियोगी। आप नेतृत्व करेंगे किन्तु किसी का अनुसरण नहीं करेंगे।

परिवार :

आपको परिवार से सुख मिलेगा। जीवन साथी के साथ सम्बन्धों में कभी-कभी तनाव हो सकता है। आपको हठधर्मिता का परित्याग करना चाहिए और परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना चाहिए। आपके बच्चों के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनके साथ आपके संबंध मुधुर होंगे। उनके भाग्य की उन्नति होगी और वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहेंगे। आपकी माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। उनका स्वास्थ्य थोड़ा प्रभावित होगा। आपके पिता को धन, समृद्धि, लाभ, यश, ख्याति आदि की प्राप्ति होगी। आपको उनके साथ मधुर संबंध रखना चाहिए। आप को उनसे लाभ मिल सकता है। आपके छोटे भाई-बहन भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी तथा आपके बड़े भाई-बहनों को प्रगति करने के लिए एक कठिन परिश्रम करना होगा और वे अपने कार्यों में सफल होंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अच्छे होंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की अन्तर्दशा आरम्भ से ही लाभदायक होगी। आपके घर में शुभ कार्य होंगे, आपको बच्चों से खुशी मिलेगी तथा आपकी शक्ति व पराक्रम में वृद्धि होगी। राहु की अन्तर्दशा अशुभ हो सकती है और स्वास्थ्य-समस्याओं तथा आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की अन्तर दशा में आपको बच्चों तथा बड़ों से सुख तथा तीर्थाटन के अवसर की

प्राप्ति होगी और आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी। दशम तथा एकादश भाव के स्वामी की अन्तर्दशा आपको व्यावसायिक सफलता तथा लाभ प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी शक्ति में कमी आएगी, असफल छोटी यात्राएँ होंगी और भाई-बहनों से कष्ट मिलेगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण मानसिक समस्याओं और तनाव से सामना होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको मानसिक तनाव होगा तथा पारिवारिक जीवन में संकट का सामना करना पड़ेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपके लिये समृद्धिशाली सिद्ध होगी और इस दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी और आप भाग्यशाली होंगे। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण आपको माता से लाभ होगा और भूमि और वाहन की प्राप्ति होगी।



**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(10/02/2026 - 09/07/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 10/02/2026 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 10/02/2026 को प्रारंभ होकर 09/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप प्रतिद्वंद्विता में विजय के लिए बेचैन रहेंगे और आगे बढ़ते जाएंगे, मगर आपको क्रोध और उतावलेपन से बचना चाहिए। सेवा और तकनीकी कार्यों में सफल हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है; नीतिपूर्वक व्यवहार आवश्यक है। साझेदार से संबंध भी तनावपूर्ण हो सकते हैं। अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त कर सकते हैं। विरासत में या जीवनसाथी के माध्यम से धन मिल सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी और सशक्त बनेंगे। आपके पिता समृद्ध होंगे; निवेश में सफलता अर्जित करेंगे। माता को उच्चपद प्राप्त हो सकता है, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, तीर्थयात्राएं करेंगी। आपके अपने भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अगर वे सेवारत हैं तो लंबी यात्राएं हो सकती हैं, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन की संभावना है। परामर्शदाता नये कार्य की योजना बनाएंगे। व्यापारीगण नये कार्यों, विशेषकर लोहे, धातु, अग्नि संबंधी कार्यों में सफल हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली चोट या बीमारी हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(09/07/2026 - 27/07/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 10/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 09/07/2026 को प्रारंभ होकर 27/07/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। कार्यों में शुरु में असफलता मिल सकती है, मगर बाद में कामयाबी हासिल होगी। विदेश यात्रा संभव है। अकेले काम करना बेहतर रहेगा। मुकदमे में सफलता के संकेत हैं। कर्ज से मुक्ति मिलेगी। जायदाद से किराये की आमदनी अच्छी होगी। राजनीतिज्ञ सफल रहेंगे। सामाजिक कार्य या स्वास्थ्य विभाग से संबंधित कार्यों में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को विरोध का सामना करना पड़ सकता है पर वे विजयी रहेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की लंबी यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहन कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे; धनार्जन करेंगे। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को लक्ष्यप्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली तकलीफ का तुरंत इलाज करवायें। नेत्ररोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(27/07/2027 - 02/07/2028)**

आपकी मंगल की महादशा 10/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/07/2027 को प्रारंभ होकर 02/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपके धन में वृद्धि होगी। ज्ञानार्जन में व्यस्त रह सकते हैं। घर पर उत्सव आदि शुभकार्य हो सकते हैं। शिशु का जन्म हो सकता है। वरिष्ठ लोगों से सम्मान मिलेगा। संतान से सुख प्राप्त होगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा। मानसिक शांति मिलेगी और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। यात्रा, आध्यात्मिक प्रगति, मानसिक उत्कर्ष और प्रगति के सुअवसरों का योग है। आत्मविश्वास और प्रसन्नता से युक्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी की प्रोन्नति होगी, सम्मान मिलेगा। आपके पिता की दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है; धनी बनेंगे। माता को अचल संपत्ति मिल सकती है; घरेलू सुख रहेगा। भाई-बहनों की लघु यात्राएं होंगी, संबंधियों से संबंध सुधरेंगे, व्यापार में लाभ होगा, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, आत्मविश्वास बढ़ेगा, उच्च पद मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्रा होगी, शत्रुओं पर जीत होगी। परामर्शदाताओं के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र की मामूली तकलीफ हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए पीले वस्त्र और अनाज दान में दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(02/07/2028 - 11/08/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 10/02/2026 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/07/2028 को प्रारंभ होकर 11/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। शत्रुओं को परास्त करेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। यात्रा, सौभाग्य और धन का संकेत है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। पिता से संबंध मधुर रहेंगे; संतान से सुख मिलेगा। धन संचित होगा। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा। पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है, उससे आय में बढ़त होगी। माता की यात्रा हो सकती है; उनके धन में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना होगा, उन्हें प्रसिद्धि मिलेगी, धन का संचय होगा।

आपकी संतान के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा, लघु यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी धनी बनेंगे।

स्वास्थ्य, विशेषकर नेत्रों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(11/08/2029 - 08/08/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 10/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 11/08/2029 को प्रारंभ होकर 08/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से खुशी और सहायता मिलेगी। लोकप्रियता बढ़ेगी। विभिन्न माध्यमों से धन आएगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान सुखकारी रहेगी। शत्रु परास्त होंगे। हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध रहेगी। सर्जनात्मक शक्ति और कल्पना उत्तम रहेंगी। निवेश से लाभ हो सकता है। संतान का जन्म संभव है। कला, नाटक, खेलकूद आदि में भाग ले सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी; निवेश अधिक करेंगे। पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं; जनता से संपर्क बढ़ेगा। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है ; अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी, कुछ परिवर्तन संभव है।

भाई-बहनों की यात्राएं हो सकती हैं; उच्चशिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारों से लाभ होगा, व्यापार में धन कमा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

कान और शरीर के निचले भागों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए हरी मूंग की दाल का दान करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(08/08/2030 - 05/01/2031)**

आपके लिए मंगल की महादशा 10/02/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/08/2030 को प्रारंभ होकर 05/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आपको उच्चाधिकारियों से लाभ हो सकता है। कार्यालय में वातावरण और सुविधाएं उत्तम रहेंगे। शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय होगी। जायदाद से किराये की अच्छी आमदनी होगी। खेलकूद आदि में रुचि बढ़ सकती है। सहकर्मी और मातहत सहयोग करेंगे। आप गुप्त रूप से दान-धर्म आदि में भाग लेंगे। फालतू खर्चे बढ़ सकते हैं। किसी निर्जन स्थान पर निवास हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी, तीर्थयात्रा हो सकती है, सफलता मिलेगी। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है, घरेलू सुख मिलेगा, माता से लाभ होगा, अप्रत्याशित लाभकारी परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो हर प्रकार से लाभान्वित होंगे, पारिवारिक सुख मिलेगा, थोड़े समय के लिए घर से दूर जा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धनी बनेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्र, दांत और उदर का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।